

## भोजपुरी लोकसाहित्य के शेक्सपियर: नट सम्राट भिखारी ठाकुर

डी० सी० पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय हल्द्वानी शहर, किशनपुर गौलापार, कु० वि० वि० नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

### सारांश

मनुष्य के बहुआयामी जीवनवृत्त की तरह ही लोकसाहित्य की परिधि भी असीमित फलक लिए हुए है। सामान्यतया मौखिक परम्परा द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी कण्ठान्तरित होकर हमारी धमनियों में लोकसाहित्य जीवन के विभिन्न रंगों का समावेश हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता है। आज देश में कतिपय क्षेत्रों में लोकसाहित्य को लिखित रूप में संग्रहीत करने का प्रचलन देखने में आता है। भारतीय साहित्य के 'निश्चल' एवं विकारहीन सृजन लोकसाहित्य मात्र आदिम, ग्रामीण, अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित, अविकसित संस्कृति समुदाय तक सीमित न होकर परिष्कृत जीवन व्यतीत करने वाले के जीवन का भी स्नेहांश के रूप में भी देखा जा सकता है। लोकसाहित्य की न केवल समृद्धता वरन् विविधता भारतीय साहित्यिक परिदृश्य की अनुपम निधि है जिनमें हमारे लोककंटों की मौलिक जीवन शैली की सौंधी सुगन्ध को सहजता के साथ अनुभूत किया जा सकता है। लोक का व्यापक सन्दर्भ में अर्थ सर्वसाधारण जन से है। तीज-त्योहार, रीति-परम्परा का पालन करते समय नगरीय जनों में भी इसकी आंशिक झलक तब भी देखी जा सकती है। इसमें असहमति नहीं हो सकती है कि आदिम जातियों में इसकी अभिव्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। सरल, सहज, सरस, अकृत्रिम रूप में लोक साहित्य सीमाओं के बन्धनों से मुक्त स्वच्छन्द नवगगन में कुंलाचे मारता उड़ान भरता दिखता है। परिवर्तन की आँधी के मध्य लोकसाहित्य में भी बदलाव के बीजांकुर परम्पराओं व विश्वासों के बीच झलक पाता है। भारतवर्ष के विविध प्रान्तों में लोकसाहित्य विविध विधाओं के रूप में आज भी जीवन्त देखा जा सकता है। जैसे अखिल भारतीय स्तर पर विविध प्रान्तों में प्रचलित कुछ प्रमुख लोकनाट्यों का परिचय मात्र इस प्रकार है

**मूल शब्द:** लोकनाट्य, शेक्सपियर, नट, भोजपुरी, मण्डली, बिदेसिया

लोकसाहित्य भारत के किसी राज्य विशेष तक सीमित न होकर अखिल भारतीय स्तर तथा यहाँ तक कि सम्पूर्ण विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के जनजीवन में इसकी अभिव्यक्ति को देखा-सुना जा सकता है। समीक्षकों का मानना है कि शिष्ट साहित्य से बढ़कर लोकसाहित्य का ही विशेष महत्व है। क्योंकि व्यापक जीवन के विभिन्न पहलुओं का यथातथ्य एवं वास्तविक चित्रण हमें लोकसाहित्य में ही प्राप्त होता है। इन्हीं विविध लोकसाहित्य सागर में एक, विहार अंचल के भोजपुरी लोकसाहित्य की समृद्धता किसी परिचय की आवश्यकता से कहीं ऊपर है। इस क्षेत्रांचल का अधिकांश भाग ग्रामीण जन-जीवन की सौंधी सुगन्ध लिए हुए है। भोजपुरी लोकसाहित्य में अनेक स्वर्णिम हस्ताक्षर शोधार्थियों की समीक्षा हेतु प्रतीक्षारत हैं। भोजपुरी में संत परम्परा हो या लोकनाट्यों, नाटककारों की स्वनामधन्य दीर्घ श्रृंखला गुरु गोरखनाथ, भरथरी, कबीर, धरमदास, पलटू साहब, लक्ष्मी सखी, रघुवीर नारायण, हीरा डोम, महेन्द्र मिसिर, मनोरंजन प्रसाद सिन्हा, श्री धरीक्षण मिश्र, मोती बी०ए०, जियावन दास, विस राम, गोरख पांडेय, शिवप्रसाद सिंह, डॉ विद्यानिवास मिश्र, आ० हजारीप्रसाद द्विवेदी भगवत शरण उपाध्याय, राहुल सांकृत्यायन, भिखारी ठाकुर, श्री दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती, रामेश्वर सिंह कश्यप, श्री विवेकी राय, आदि का भोजपुरी भाषा-साहित्य संस्कृति के उत्थान में अवदान अविस्मरणीय है। इनमें से ही एक अनमोल नगीना हैं भिखारी ठाकुर, जिनका लोकनाट्य कला में योगदान भोजपुरी लोक साहित्य में मील का पत्थर है। विदेसिया लोकनाट्य मात्र ही भिखारी ठाकुर के परिचय हेतु पर्याप्त है। यूँ तो 'बेटी वियोग', आदि रचनाएँ भी उनकी कीर्तिपताका के यश-स्तम्भ हैं। अपना परिचय देते हुए वह घोषणा करते हैं :-

नाम भिखारी काम भिखारी रूप भिखारी मोर  
ठाठ पलानि मकान भिखारी, चहुँदिसि भइल सोर।  
जाति के हजाम मोर कुतुबपुर ह मोकाम।  
छपरा से तीन मील दियरा में बाबू जी  
पूरब के कोना पर गंगा के किनारे पर  
जाति पेसा वाटे विद्या नाही बाटे बाबू जी।

| प्रान्त      | नाम लोकनाट्य                            | प्रान्त | लोकनाट्य                     |
|--------------|-----------------------------------------|---------|------------------------------|
| राजस्थान     | गबरी                                    | गुजरात  | भवाई                         |
| असम          | अंकिया                                  | मालवा   | माच                          |
| बिहार        | बिदेसिया, जट-जटिन,<br>बहुरूपिया, जात्रा | केरल    | कूटियाट्टम,<br>चाविट्टुनाटकम |
| आन्ध्रप्रदेश | कुरवोजि,विदायत नाच,<br>छायापुतली        | कर्नाटक | छोड्डता                      |
| मिथिला       | कीर्तनिया                               | कश्मीर  | मोंडपथ                       |
| बंगाल        | नकाब                                    | तमिल    |                              |
| महाराष्ट्र   | तमाशा, गोंधल, दशावतार,<br>ललित          | तेलगू   | विधि                         |
| तमिलनाडु     | तेरुकुत्तु                              | कन्नड़  | भागवतम्                      |
| उ०प्र०       | नकल, रामलीला,<br>रासलीला,               |         |                              |
| हि०प्र०      | करियाला                                 |         |                              |
| हरियाणा      | स्वांग                                  |         |                              |

लेखन गायन व नर्तन की त्रिवेणीयुक्त व्यक्तित्व के धनी भिखारी ठाकुर को उनके कुतुबपुर से कलकत्ते तक के संघर्षमय दिनों में साहित्य सृजन बहुमुखी प्रतिभा आदि के बहुआयामी क्रियाकलापों से समझा जा सकता है। इनके द्वारा भोजपुरी में लिखा गया 'विदेसिया' नाटक परवर्ती कलावन्तों के लिए आदर्श मानक बनकर सामने आता है। इसके उपरान्त एक श्रृंखला सी प्रारम्भ हो गई भोजपुरी में ऐसे नाटकों को रचने की भोजपुरी नाटकों के संवर्द्धन में भिखारी ठाकुर का अवदान-अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि लोकनाटकों में विदेसिया शैली क बीजवपनकर्ता के रूप में आप जाने गये। ग्राम्यांचलीय सुषमा से आच्छादित अधिकांश भोजपुरी क्षेत्र की धरातलीय विविधता उसे लोकसाहित्य का सिरमौर बनाती है। किन्तु विचारणीय प्रश्न है कि शिष्ट साहित्य के पैरोकारों ने इसे अपने अभिजात्य साहित्य संसार में उल्लेख करना भी अद्यतन उचित नहीं समझा। स्थानीय परिवेश को अपने नाटकों में पात्रों के माध्यम से उकेरती भिखारी ठाकुर की दृष्टि लोक संस्कृति का आमूल प्रस्तुतीकरण करती है। जब

संचार यातायात के साधन नहीं थे तब भी पूरे उत्तरी पश्चिमी बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश में हजारों से भी अधिक नाट्य मण्डलियों लोकभावनाओं को बड़े मन-मोहक रूप में प्रस्तुत करती हैं। रोजगार के लिए पलायन करती युवा पीढ़ी, घर में नवविवाहिता की स्थिति, परदेश में परस्त्री के प्रसंग में पड़ा पति, सामाजिक ताना-बाना, लोक व्यवहार, मर्यादा, परम्परा, भावनाएँ, रीति-रिवाज, लोकलाज आदि को कितनी कुशलता के साथ भिखारी मूंगे की माला की तरह पिरोकर पाठकों-दर्शकों के सामने रखते हैं यह उनके समीक्षक भली-भाँती जानते हैं। प्रोषितपतिका बिदेसिया नाटक की विरहण की वेदना देखिए :-  
दिनवा त बीते राम तोरी इन्तजरिया में रतिया नयनवा ना नींद रे बिदेसिया।

घड़ी राति अइलों राम पिछली पछरवा से,  
लहरे करेजवा, हमार रे बिदेसियज्ञ

निःसन्देह भोजपुरी नृत्य नाट्य की विदेसिया शैली के बिना भोजपुरी लोकसाहित्य संस्कृति की मूल दर्शन की कल्पना नहीं की जा सकती है, जिसके मंचन होने पर जनता जनार्दन भीड़ को नियन्त्रित करने के लिए पुलिस का प्रबन्ध करना पड़े उसकी लोकप्रियता समझ में आसानी से आती है। अपने भोजपुरी गीतों, नाटकों एवं सामाजिक कार्यों के लिए ख्यातिलब्ध भिखारी को कवि गीतकार, नाटककार, नाट्य-निर्देशन, लोकसंगीतकार व अभिनेता के साथ लोकनर्तक व समाज सुधारक के रूप में देखा जा सकता है। भारत में अंग्रेजों के आगमन के बाद शोषण का जो कुचक्र चला उससे विहार की भूमि भी अछूती नहीं रही। यहाँ भी भोजपुरी क्षेत्र से रोजगार के लिए मजदूर के रूप में पलायन न केवल कलकत्ता, असम वरन् मारीशस, सूरीनाम, ट्रिनीडाड, फिजी आदि अन्य ब्रिटिश उपनिवेश स्थलों में हुआ। यहाँ की जनमानस में धारणा है कि कलकत्ता, असम गया नौजवान या तो बुढ़ापे में लौटता है या फिर लौटता ही नहीं, वहीं का होकर रह जाता है। युवावस्था में काले बाल लेकर गया युवा वृद्धावस्था या अर्धेडावस्था में श्वेतकेश लेकर लौटता है। मातृशक्ति का विश्वास है कि बंगाल, असम की जादूगरनियों उनके कन्त को भेड़ या सुग्गा बना देती है। उनका काला जादू इनके जीवन में जहर घोल जाता है। भिखारी ठाकुर ने नारी मनोदशा चित्रण यूँ किया है :

पुरुब-पुरुब जिनि करा तू बिदेसिया रे...  
पुरुब का पनियां खराब रे बिदेसिया...  
वहि रे पुरुरबवा में बडि बंगलिनिया, जदुवन से  
भरल बा शरिर रे बिदेसिया....

भिखारी ने प्राकृतिक संकेतों द्वारा नारीमन के सूक्ष्म भावों का कुशल चित्रण किया है। कामरूप का जादू या बंगाल का जादू के लोकमानस की भावना का निरूपण उन्होंने इस तरह किया है कि विदेसिया का नायक, नायिका को गौना करके घर लाता है और स्वयं नौकरी करने परदेश चला जाता है। उधर दूसरी स्त्री से उसका तालमेल बढ़ता की जाता है। पहली पत्नी को विस्मृत सा कर देता है जहाँ उसकी विरहणी तिल-तिल कर जल रही है-

अमवा माजरी गइले, लगले टीकोरवा रे,  
दिन पर दिन पियरात रे, बिदेसिया...  
एक दिन बहि जइहें जुलुमी बेयरिया,  
डार-पात जइहें खहराई रे, बिदेसिया...

प्रतीकात्मक रूप में भिखारी कह रहे हैं कि आम में बौर आ गये हैं अर्थात् यौवन मधु और गंधपूरित होकर उन्मद हो रहा है।

उसमें टिकोरे भी लग गए हैं अर्थात् यौवन चढ़ाव पर है। यह स्थिति रोज ना रहेगी। तेज पवन चलेगी हो सकता है कि हवा ध्वंसक बहे। यौवन का सारा सौन्दर्य आम के वृक्ष की तरह समाप्त हो जायेगा जो आंधियों के प्रचण्ड वेग को झेलकर अपनी सारी शोभा को गँवाकर कंकालमात्र रह जायेगा। वियोगिनी की कितनी गहन मनोदशा का चित्रण किया है भिखारी जी ने भोजपुरी लोकमानस को सजीव प्रस्तुत करती इन्ही मनोभावों के मध्य बटोही से व्यक्त करती हैं (नाटक में बटोही का अभिनय स्वयं भिखारी जी करते हैं) उसे ज्ञात होता है कि वह भी कलकत्ता जा रहा है। नायिका अपने पति का पता लगाने का अनुरोध करती है तब बटोही उनका नाम, अता-पता परिचय पूछता है पर पति का नाम बताने के बजाय वह उनका परिचय कुछ इस तरह देती है -

हमरे हरी जी की काली-काली जुलुफी चंदन  
घेवरल लीलार रे बटोहिया  
अंखिया त हउवे जैइसे अमवा के फरिया  
चोखे-चोखे हउवे नैना कोर रे बटोहिया  
ओठवा त हउवे जइसे कतरल पनवा  
नकिया सुगनवा के ठोर रे बटोहिया.....

विरहण द्वारा दिये गये परिचय के आधार पर बटोही परदेशी प्रियतम को ढूँढने में सफल होता है तथा पति, पत्नी को साथ लेकर परदेश कलकत्ता जाता है। उपरोक्त प्रसंग से पता चलता है कि भिखारी परम्परा से किस सीमा तक जुड़े हुए हैं। 'विदेसिया' सही मायने में लोक नाट्य परम्परा का सर्वांगीण विकास है। सामाजिक पक्ष के अतिरिक्त इसका व्यक्तिगत पक्ष भी है। नायक जीव का, दूसरी पत्नी माया की विदेसिया जीव का बटोही संत का प्रतीक है जो भटके नायक को सही मार्ग पर ले आता है। यही कारण है कि महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने भिखारी ठाकुर को अनगढ़ हीरा कहा है।<sup>1</sup>  
इसी तरह 'बेटी वियोग' में बेमेल विवाह का दंश झेलती कन्या की मनोदशा का सुन्दर चित्रण करते हुए सामाजिक विसंगतियों पर गहरी चोट करते हैं भिखारी ठाकुर :-

मुँहवा में दाँत नाही, गाले मुँह लार चुए  
बोलते पर भीतर सड़ल बदबू बाबू जी। पति  
कर देखि गति पागल भइल मति  
रोई-रोई करीला विहान भोर बाबू जी।।

बेटी वियोग जिसे लोगो ने बेटी बेचवा नाम दिया लोकनाट्य में भिखारी ठाकुर ने ऐसा हृदय विदारक चित्र उकेरा है कि पाषाण हृदय भी द्रवित हो उठता है-

रूपया जिनाई निहल, पगहा धराई दिहल  
चेरिया से छेरिया बनवल हो बाबू जी

बेटी वियोग का दृश्य देखिए बारात द्वारे पर है महिलाएँ परीछन हेतु आती हैं, अर्धेड बुढ़ऊ, दुल्हा का चित्रण भिखारी ने उन महिलाओं से किन शब्दों में कराया है-

चलती के चावल दुलहा, सूप के झकारल हे,  
दिउका के लागल बर, दुआरे बाजा  
बाजल हे। आवाँ के पाकल दुलहा, झाँवा  
के झारल हे, कलछुल के दागल  
बकलोलपुर से भागल हे आम लेखा  
पाकल दुलहा गाँव के निकालल हे  
अइसन बकलोल बर, चटकदेव के भावल  
हे।

आर्थिक बाध्यता के चलते गरीबी के कारण बेटी हुई बेटी के ससुराल जब उसका पिता जाता है तब बिटिया अपनी दुर्गति का चित्रण किन शब्दों में करती हैं, किसकी पलकें नम नहीं होंगी –

बूढ़ वर के कइलऽ विवाह,  
बेटी के ना रखल खेयाल,  
पुरुष के कवन कसूर हो बाबूजी।  
कफ से भरल बाड़ी, रात दिन होखे ला जाड़ी  
हिलिया काटत दिनवा बीतेला हो बाबूजी।

हास्य रस की धारा में अन्तर्निहित करुण रस की लकीर का चित्रण करती मिखारी ठाकुर की रचना 'गबरधिचोर' नारी अधिकारों की सशक्त ध्वनि बनकर उभरती है। अवैध संतान, सामाजिक विसंगति को हास्य व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त करने की कला में निपुण मिखारी वास्तव में लोक भावनाओं के चतुर चितरे हैं। श्री मिखारी ठाकुर के शब्दों में "गान उहे ह जेह से मालिक के नाम होय। नकल तमासा उहे चीज ह नेह में धर्म के चर्चा होय गबरधिचोर नाटक में धर्म इहे समुझे के चाही ह जे गबरधिचोर की मतारी कइसन दुख कहि के रोवल बाड़ी। गाना में, चौपाई में आ पूर्वी में जइसन लड़िका के होख में मतारी के जइसन दुःख होला, जवान दुख में मतारी लोग के प्रान छूटि जाला से सब बरन् करत बाड़ी ई बाड़े ते दुनिया से आपन प्रान दे देवे के तइयार बाड़न। ईश्वर से विनय करत बाड़न जे हम मतारी-बाप के कुछ सेवा ना करलीं। आजकल के जे बेटा असल बा से कह देता जे पंच के बात ना मानब। खास करके उनुकरा अपने जान के फिकिर बा। माता-पिता के सेवा के फिकिर तनिको नइखे। सभा के अन्दर गबरधिचोर बाइसन चौपाई कहत बाड़ै-

मातु पिता के सेवा नाही।  
नाहक नर-भइलीं जग माहीं।।

'विधवा विलाप' कलियुग प्रेम आदि नाटकों में मिखारी ने नारी मुक्ति का बिगुज फूँका है। मिखारी ठाकुर ने अपने नाटकों के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, संस्कृतिक, आर्थिक, जातीय सभी प्रकार की समस्याओं को केन्द्र में रखकर समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। विविध सामाजिक विद्रूपताओं विडम्बनाओं को उन्होंने अपनी मातृभाषा भोजपुरी में जनमानस के सम्मुख रखा है वह अद्वितीय है। सामान्यतया एक रचनाकार की तुलना दूसरे कृतिकार से नहीं की जा सकती, किन्तु जब मिखारी को भोजपुरी का शेक्सपियर कहा जाता है तो लगता है कहीं कुछ तो सम पुट होगा। यूँ तो दोनों की स्वसमकालीन परिस्थितियों में भिन्नता सर्वविदित हैं। किन्तु समाज को देखने पढ़ने की जो गहन अन्तर्दृष्टि दोनों में दिखती है वह उन्हें वास्तव में एक समान मोड़ पर लाकर खड़ा करती है तथा सुधी पाठकों को भी। दोनों मूलतः नाटककार रहें हैं। दोनों ने गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में समान लेखनी चलाई। अपने परिवेश, पर्यावरण व पृष्ठभूमि का तटस्थ आँकलन पात्रों द्वारा रचना में करना दोनों को आम-जीवन के निकट व घुलन-मिलनशील होना दर्शाता है। यद्यपि दोनों के समय में पर्याप्त अन्तराल है। शेक्सपियर 23 अप्रैल 1564 ई0 26 अप्रैल 1616 ई0 तक तथा मिखारी ठाकुर का समय 18 दिसम्बर 1887 ई0 से 10 जुलाई 1971 ई0 तक रहा। लन्दन के स्टैनफोर्ड में जन्में शेक्सपियर के बारे में कहा जाता है कि वह प्रेक्षागृह में नाटक देखने आये दर्शकों के घोड़ों की रखवाली व देखभाल किया करते थे। वही से वह रंगमंच के अभिनेताओं के सम्पर्क में आये फलतः अभिनयानुखी होते हुए वह नाटक लेखन व प्रतिभाग में रुचि रखने लगे। माना जाता है कि उनके नाटकों में मौलिकता कम यूनानी नाटको की आत्मा अधिक है।

युगकवि दिनकर के शब्दों में "जब शेक्सपियर का गहनता से अध्ययन किया जाने लगा तब यह देखकर एक समय लोग चकित रह गए थे कि विश्व का यह सर्वश्रेष्ठ कलाकार मौलिक नहीं है। उसने दूसरों से कथावस्तु ही नहीं ली है वरन् पक्तियाँ भी उठाई हैं, पक्तियों के भाव भी लिए हैं। मेरा ख्याल है कि आज यह बात सच भी हो तो इससे शेक्सपियर की महत्ता में कमी नहीं आती। मौलिकता एक ऐसी चीज है जिसके अभाव में महाकवियों की शक्ति और छोटे कवियों की दुर्बलता में बृद्धि होती है। जो लोग मौलिकता के नाम पर कवि पर पड़े प्रभावों की खोज करते हैं उन्हें तन्दुरुस्त आदमी की तन्दुरुस्ती का रहस्य उन सब्जियों, भेड़ों, बकरों, और मुर्गों में खोजना चाहिए जिन्हें खाकर वह पचा चुका है।<sup>102</sup> मिखारी ठाकुर पर इस तरह के आरोप दिखाई-सुनाई नहीं दते एक, सम्पन्न राष्ट्र का रचनाकार जिसे विकसित समाज, पुस्तकालय आदि का संसर्ग मिला, दूसरा ब्रिटिश औपनिवेशिक एक प्रान्त का निवासी। जिसके पास आधारभूत शिक्षा संसाधन नहीं हैं। तथापि उसकी लोकप्रियता इसी तरह अपने भाषा-भाषियों में सातवें आसमान पर थी जैसे शेक्सपियर की अपने समाज में। अत्यन्त संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी मिखारी लिखित, मिखारी चउजुगी, मिखारी जयहिन्द, खबर, विरहा-बहार, कलियुग बहार आदि महत्वपूर्ण नाटक हैं। मिखारी की गहन संवेदनशील दृष्टि उन्हें अन्य रचनाकारों से पृथक पहचान प्रदान करती है। आजीविका के लिए परदेश गमन, अशिक्षा, गरीबी, पिछड़ापन, जात-पात, ऊँच-नीच, पाखण्ड, शोषण, अभावग्रस्त जीवन, बदहाल गाँव, पिछड़ी कृषि, पशुधन केन्द्रित अर्थव्यवस्था, परम्परा के नाम पर रूढ़ि व अन्धविश्वास, गृहस्थ सुख से वंचित ललनाएँ, बाल-परवरिस की अव्यवस्था आदि वह बिन्दु हैं जो मिखारी की कलम से आम आदमी तक सरलता से पहुँच बनाते हैं। इन्हीं सूक्ष्मताओं का चित्रण दर्शकों को झूमने पर बाध्य कर देता है। सम्भवतः इसी कारण पाठक या दर्शक वर्ग उन्हें भोजपुरी का शेक्सपियर की पदवी देते हैं। लोकसाहित्य को हाशिए पर रखने की पूर्वाग्रहयुक्त मानसिकता ने अखिल भारतीय स्तर पर न जाने कितने लोकसाहित्य को समालोचना की सीमा-परिधि से बाहर कर कितना अहित किया है देश का। सामाजिक सांस्कृतिक सरोकारों को मुखरित ध्वनि देता लोकसाहित्य चाहे वह भोजपुरी हो या कुमाउनी-गढ़वाली, जौनसारी आदि को मुख्यधारा के साहित्य से वंचित करना न केवल षडयन्त्र है वरन् तथाकथित झंडाबरदारों की औपनिवेशिक मानसिकता का प्रमाण भी है। लोकसाहित्य का यह दुर्भाग्य ही है कि ऐसे तमाम लेखक-लेखिकाओं को गुमनाम एवं हाशिए पर रखकार हम सीमित दायरे में भारत के सम्पूर्ण साहित्य का मूल्यांकन करने का हट किये बैठे हैं। लेकिन हम भूल कर रहे हैं कि साहित्य के इस संकुचित दायरे में बैठकर रचनाओं को गढ़ने की होड़ में हम भारत की समूची साहित्यिक कौशल को कही पीछे छोड़ आये हैं और साहित्य की मामूली सामाग्री के साथ साहित्य का पैरोकार बने घूम रहे हैं।<sup>103</sup> कुतुबपुर से लेकर छपरा तक जहाँ लोकनाटकों में सांगोपांग मिखारीमय वातावरण देखने को मिलता है। उनका विशाल पाठकवर्ग रंगमंच का अभिनय देखते-देखते कब पात्र रूप में परिणत हो जाता है इसका उसे पता ही नहीं रहता। सुध-बुध बिसरा के तल्लीन होकर पाठक-दर्शक इसका आनन्द लेते हैं। हजारीबाग में उनके बेटी वियोग जिसे जनता ने बेटी बेचवा नाम दिया के मंचन में दर्शक फूट-फूट कर रोने लगे और सौगन्ध ली कि बेटी को बेचा नहीं जायेगा। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने गोदान में भी होरी द्वारा धनाभाव के कारण अपनी छोटी बेटी रूपा का विवाह बेमेल-अधेड़ से दर्शाया है। वास्तव में मिखारी ठाकुर जैसे लोककलाकार ही भारत के असली विश्वविद्यालय हैं, जिनसे सीखे बिना हमारे विश्वविद्यालय अपने उद्देश्य में कामयाब नहीं हो सकते हैं।<sup>104</sup>

भरतमुनि के अनुसार बह्म ने सभी वर्णों के मनोरंजनार्थ ऋग्वेद से शब्द यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से गाने तथा अथर्ववेद से रस लेकर पंचम वेद के रूप में नाट्य शास्त्र की रचना की। लोकनाट्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है। इसका उद्देश्य जनसाधारण का आनन्द और ज्ञानवर्धन करना था। लोकनाट्य लोकगत अर्जित अनुभूतियों में से मानव में अध्यात्म की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भिखारी ठाकुर की बहुमुखी प्रतिभा उन्हें इन मानकों पर प्रमाणित कर नट सम्राट व भोजपुरी का शेक्सपियर प्रमाणित करते हैं। लोकनाट्य को अपनी अभिव्यक्ति का उन्होंने सबल साधन बनाया लोकनाट्य के सम्बन्ध में डा० श्यामलाल परमार के अनुसार "लोकनाट्य से तात्पर्य नाटक के उस रूप से है जिसका सम्बन्ध विशिष्ट शिक्षित समाज से भिन्न सर्व साधारण के जीवन से है। और जो परम्परा से अपने-अपने क्षेत्र के जन समुदाय के मनोरंजन का साध रहा हो।"<sup>05</sup>

लोक के प्रहरी सजग-समर्पित भाव से लोकसाधनारत हैं कि युवा पीढ़ी को उसके गौरवमय समृद्ध लोकसाहित्य से परिचित कराते रहें। साहित्यिक संस्कृति की दृष्टि से सम्पन्न भोजपुरी क्षेत्र लोक साहित्य के संरक्षण एवं संवर्द्धन में भी आगे हैं। यह बात और है कि भारतीय 22 राजभाषाओं जिन्हें संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान प्राप्त है, में ही साहित्य नहीं हैं। भोजपुरी भाषा के उत्थान-विकास में भिखारी का योगदान अविस्मरणीय है।

### सन्दर्भ सूची

1. पाण्डेय वारीन्द्र, बिदेसिया के सर्जक : भोजपुरी के पुरोधा, दैनिक जागरण, साहित्यिक पुनर्नवा, 18 अप्रैल 2016, पृ० स० सप्तंरग।
2. दिनकर, साहित्यमुखी, संस्करण 1968, उदयाचल पृ०स० 54।
3. द्विवेदी सदानन्द, रचनाकर्म में हाशिए पर लोकसाहित्य, राष्ट्रीय सहारा, मंथन, दे० दून 22 जून 2014 पृ० स०009
4. शाही सदानन्द, देश के लोक विश्वविद्यालय है भिखारी ठाकुर, हिन्दुस्तान 18 दिसम्बर 2017 पृ० स० 10।
5. पाण्डेय आनन्दनारायण, लोकसाहित्य के सिद्धान्त एवं भोजपुरी साहित्य, राजेन्द्रा पब्लिकेशन, गोरखपुर, संस्करण 2017-18. पृ०स० 108।